eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 4, Issue 02, July 2021

भारतीय राष्ट्रीय नवजागरण और उदारवादी राष्ट्रीयताः एक विशद विश्लेषण

[1]डॉ0 अनुपमा श्रीवास्तव

[1]एसो0 प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, ज0ला0ने0मेमो0परा0 महाविद्यालय, बाराबंकी (उ0प्र0)

Received: 07 July 2021, Accepted: 15 July 2021, Published with Peer Review on line: 10 Sep 2021

Abstract

भारतीय नवजागरण के प्रभाव से वह धुन्ध भारतीय जनमानस के ऊपर से छंटने लगी थी, जिसने भारत को कूप–मण्डूक बना दिया था, जड़ता में जकड़ लिया था, और राजनीतिक पराधीनता देकर उसके वैभव, ऐश्वर्य और शौर्य का हरण कर लिया था। भारतीय समाज में, विशेष रूप से हिन्दू समाज में जो बिखराव हुआ था, उसके फलस्वरूप ही विदेशियों का आक्रमण हुआ और भारत की लूट शुरू हुई, भारत में विदेशी आक्रान्ताओं की राजनीतिक सत्ता कायम हुयी। नवजागरण के प्रभाव से भारतीय जनता में अद्भुत चेतना जाग उठी थीं। यह चेतना समान रूप से कई दिशाओं में अपना प्रभाव प्रस्तुत कर रही थीं, जिनमें धार्मिक सुधार, सामाजिक सुधार, अतीत के गौरव के प्रति लगाव, शैक्षिक प्रसार पाश्चात्य प्रभाव का अंगीकार तथा राजनीतिक जागृति। इन तमाम प्रभावों से ओतप्रोत होकर भारत की जनता ब्रिटिश शासकों से सुविधाओं की निरंतर मांग करने लगी थी। ब्रिटिश शासक भारतीय जनता के असंतोष को आक्रोश की सीमा तक नहीं जाने देना चाहते थे, क्योंकि इस आक्रोश का परिणाम वे 1857 की क्रान्ति के रूप में भुगत चुके थे। स्थिति अनकहे तनाव की तरफ बढ़ती गयी और इससे बचने के लिये नए रास्तों की खोज की जाने लगी। कांग्रेस की स्थापना इसी स्थिति की परिणति थी।

शब्द संक्षेप– भारतीय नवजागरण उदारवादी राष्ट्रीयता, रानीतिक पराधीनता, स्वतंत्रता, हिन्दुत्व, राष्ट्रीय पुनरूत्थान, कांग्रेस राष्ट्रीय आंदोलन।

Introduction

भारत में नवजागरण का काल वह समय था जब भारतीय जनमानस के मस्तिष्क से अनुदारवादिता, रूढ़िवादिता की धुन्ध छंट रही थी उनका मस्तिष्क कुछ खुल रहा था जड़ता के बन्धन ढ़ीले हो रहे थे जो जड़ता राजनीतिक पराधीनता के कारण समाज में व्याप्त हो चुकी थी भारतीय हिन्दू समाज का जो बिखराव हुआ था उसके फलस्वरूप ही विदेशियों का आक्रमण शुरू हुआ और उनकी राजनीतिक सत्ता कायम हुयी। यही वह काल था, जब यूरोपियनों की महत्त्वाकांक्षाएं राजनीति की तरफ बढ़ने लगीं और अन्ततोगत्वा इंग्लैण्ड की ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने भारत में राजनीतिक सत्ता स्थापित कर ली। अंग्रेजों के द्वारा देशी राज्यों को हड़पा जाने लगा और भारत की परम्परागत आर्थिक सत्ता को नष्ट कर दिया गया, जिससे भारत में बेरोजगारी, अकाल, भुखमरी और अव्यवस्थाओं का साम्राज्य हो गया। भारतीय जनता में भारी असंतोष पनपा, जिसके परिणामस्वरूप 1857 की क्रान्ति का जन्म हुआ। किन्तु यह क्रान्ति भी अपने मिशन में पूरी तरह से सफल नहीं हुई। फिर भी इससे भारतीय

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 4, Issue 02, July 2021

जनता में एक अभूतपूर्व चेतना का उदय हुआ।[1] इस चेतना ने भारतीय नवजागरण को जन्म दिया और भारतीयों का ध्यान अपने गौरवशाली अतीत को प्राप्त करने के लिए केन्द्रित होने लगा। जैसा कि कहा गया है कि ''19वीं शताब्दी के पहले दशकों में पाश्चात्य प्रभाव के कारण आत्मालोचन और धार्मिक सुधार प्रक्रिया शुरु हो चुकी थी। इस शताब्दी के उत्तरार्द्ध में यह प्रक्रिया और तेज हुई। ईसाईयत की चुनौती ने हिन्दुओं और मुसलमानों को अपने घर सम्भालने के लिए उत्तेजित किया। दोनों धर्म वालों ने यह समझ लिया कि समय के साथ उनकी मौलिक उज्ज्वलता मद्धिम पड़ गयी थी, उनके धर्म की आदिम शुद्धता कलुषित हो गयी थी और धर्म के ऊपर अंधविश्वासों, रूढ़ियों, बचकाने अनुष्ठानों और कुसंस्कारों का जंग लग गया था। हिन्दू धर्म और इस्लाम, दोनों इन बुराइयों से छुटकारा चाहते थे, ताकि आध्यात्मिक जीवन की धारा साफ और पुष्ट होकर बहे और व्यक्ति तथा समाज को स्वतंत्रता और सुख की ओर ले जा सके।[2]

नवजागरण के प्रभाव से भारतीय जनता में अद्‌भुत चेतना जाग उठी थी। यह चेतना समान रूप से कई दिशाओं में अपना प्रभाव प्रस्तुत कर रही थी, जिनमें धार्मिक सुधार, सामाजिक सुरक्षा अतीत के गौरव के प्रति लगाव, शैक्षिक प्रसार पाश्चात्य प्रभाव का अंगीकार तथा राजनीतिक जागृति। इन तमाम प्रभावों से ओतप्रोत होकर भारत की जनता ब्रिटिश शासकों से सुविधाओं की निरंतर मांग करने लगी थी तथा प्रशासन–सत्ता में अपनी भागीदारी की बात भी करने लगी थी। ब्रिटिश शासक भारतीय जनता के असंतोष को आक्रोश की सीमा तक नहीं जाने देना चाहते थे, क्योंकि इस आक्रोश का परिणाम वे 1857 की क्रान्ति के रूप में भुगत चुके थे। इसलिए पहले तो कम्पनी के हाथों से भारत का शासन सीधे–सीधे इंग्लैण्ड के हाथों में पहुंच गया, और उसके बाद शासनिक, प्रशासनिक सुधारों का दौर भी शुरू हुआ। स्थिति यह रही कि ब्रिटिश शासक भारतीयों को अपनी चालाकी और चतुराई के बल पर धोखा देते रहे, फिर भी अनेक क्षेत्रों में उनके द्वारा किए गये सुधारों को भुलाया नहीं जा सकता, और भारत के जागरूक लोग चालाक अंग्रेजों से अधिकाधिक मांग करते रहे।

स्थिति अनकहे तनाव की तरफ बढ़ती गयी और इससे बचने के लिए नये रास्तों की खोज की जाने लगी। कांग्रेस की स्थापना इसी स्थिति का परिणति थी। वस्तुतः ''अपने प्रारम्भिक वर्षों में कांग्रेस सम्पूर्ण रूप से उदारवादी नेताओं के प्रभाव में थी, जिनका विश्वास विशुद्ध वैज्ञानिक साधनों पर था, और जिनके आन्दोलन का लक्ष्य यही था कि भारतीय शासन व्यवस्था में थोड़े–बहुत सुधार किये जाएं। अधिकांश उदारवादी नेता पश्चिमी शिक्षा पद्धति में पले थे, अतः ब्रिटिश शासन की उदारता, न्यायप्रियता में उनका अटूट विश्वास था। वे भारत पर ब्रिटेन के शासन को सौभाग्यपूर्ण समझते थे और ब्रिटेन के प्रति स्वामीभक्ति रखते थे।[3]

वास्तव में कांग्रेस के जन्म के साथ ही भारत में उदारवादी युग का प्रारम्भ होता है। इसके जनक अंग्रेज मिस्टर ओ0ए0 ह्यूम थे, जो कांग्रेस के माध्यम से भारत के उस उबाल को धीरे–धीरे समाप्त कर देना चाहते थे, जो भीतर ही भीतर असंतोष के फलस्वरूप भारतीयों में इकट्‌ठा हो रहा था। इसलिए इसे ब्रिटिश शासन का 'सेफ्टी वॉल्व' भी कहा गया है। डॉ0 बी0 पट्‌टाभि सीतारमैया उन परिस्थितियों पर प्रकाश डालते हैं, जो नवजागरण के फलस्वरूप उपस्थित हुई थीं, और जिन्होंने कांग्रेस को जन्म दिया था। वे लिखते हैं कि ''राष्ट्रीय पुनरुत्थान का अन्तिम रूप जो कांग्रेस की

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 4, Issue 02, July 2021

स्थापना से पहले भारतवर्ष में दिखाई दिया, वह है बंगाल के श्री रामकृष्ण परमहंस का युग। स्वामी विवेकानन्द उनके प्रमुख शिष्य थे, जिन्होंने उनके उपदेशों का प्रचार पूर्व और पश्चिम, दोनों जगह किया। रामकृष्ण मिशन न तो कोरे योग साधकों की, और न केवल भौतिकवादियों की संस्था है, बल्कि एक ऐसा आध्यात्मिक आदर्श रखने वाली संस्था है, जो लोकसंग्रह या समाज सेवा के महान कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करती। उसने संसार के विभिन्न राष्ट्रों के सामने उपस्थित सामाजिक व राजनैतिक प्रश्नों को सुलझाने के लिए कुंजी का भी काम किया है। ये तमाम हलचलें, सच पूछिये तो भारत की राष्ट्रीयता के इस धागे में लगे भिन्न–भिन्न सूतों के समान हैं। भारत का यह कर्तव्य था कि इनमें एक–सा सामंजस्य पैदा करे, जिससे पूर्वदूषित विचार और अंधविश्वास दूर होकर प्राचीन वेदांत मत की संशुद्धि हो, वह नवीन तेज से लहलहा उठे और नवीन युग के राष्ट्रधर्म से उसका मेल बैठ सके। कांग्रेस का जन्म इसी महान कार्य की पूर्ति के लिए हुआ था।[4]

इस प्रकार यह बात स्वतः सिद्ध हो जाती है कि कांग्रेस की स्थापना नवजागरण के प्रकाश में हुई। चूंकि नवजागरण से प्रेरित भारतीयों के द्वारा ही ब्रिटिश शासकों से सुविधाओं की मांग की जा रही थी, और यही लोग भारती जनसामान्य को एकत्रित करने में अहम भूमिका निभा रहे थे। इसलिए चाहे तो कांग्रेस का गठन रहा हो, अथवा राष्ट्रीय आन्दोलन का प्रारम्भिक नेतृत्व, उसमें जो लोग कार्यरत थे, वे पूरी तरह से नवजागरण से प्रभावित थे। एक प्रकार से राष्ट्रीय आन्दोलन के प्रारम्भ की विचारधारा उसी विचारधारा का सम्मिलित रूप था, जो नवजागरण के पुरोधाओं ने प्रकाशित की थी। राष्ट्रीय आन्दोलन के कार्यक्रम भी अब बिन्दुओं को लेकर ही आगे बढ़ रहे थे, जिन्हें नवजागरण के नेताओं ने अपने–अपने काल में इस लक्ष्य को सामने रखकर प्रस्तुत किया था, ताकि भारतीय जनमानस अपने गौरवशाली अतीत को समझकर हीन भावना से बाहर निकल सके। भारत में जो संस्थाएं मुख्य रूप से भारतीयों द्वारा स्थापित की गयी थीं, अथवा की जा रही थीं, उनकी सोच मिली जुली थी। वे अपने अतीत और पश्चिम के वर्तमान को मिश्रित करके नये भारतीय समाज का निर्माण कर रही थीं। यही विचारधारा बाहुल्यता के साथ राष्ट्रीय आन्दोलन को उसके जन्म के बाद, उसके शैशवावस्था में उसे चलना सिखा रही थी, और इस प्रकार भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन उदारवाद की गोद में पुष्पित और पल्लवित होने के लिए पोषण पा रहा था। कांग्रेस भी इसी स्थिति से प्रकट हुई। इस सम्बन्ध में प्रस्तुत कथन द्रष्टव्य है–

''उक्त परिस्थितियों में ही कांग्रेस की स्थापना हुई। आरम्भ में मिस्टर ह्यूम का यह विचार था कि कलकत्ता की इण्डियन एसोसिएशन, बम्बई की प्रेसिडेंसी एसोसिएशन और मद्रास की महाजन सभा नेशनल यूनियन बहुत–कुछ सामाजिक प्रश्नों में ही हाथ डालें। उन्होंने लार्ड डफरिन से इस विषय में सलाह ली, जो कि हाल ही में वायसराय बनकर आये थे।.....डफरिन ने मिस्टर ह्यूम से कहा कि मेरी समझ में यह तरकीब उपयोगी न होगी, क्योंकि इस देश में ऐसा कोई सार्वजनिक मण्डल नहीं है, जो इंग्लैण्ड की तरह यहां सरकार का विरोध का कार्य कर सके। इसलिए ऐसी दशा में यह अच्छा होगा और इसमें शासक तथा शासित, दोनों का हित है कि यहां के राजनीतिज्ञ प्रतिवर्ष अपना सम्मेलन किया करें और सरकार को बताया करें कि शासन में क्या–क्या त्रुटियां हैं, और उसमें क्या–क्या सुधार किये जाएं। उन्होंने यह भी कहा कि ऐसे सम्मेलन का सभापति स्थानीय गवर्नर नहीं

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 4, Issue 02, July 2021

होना चाहिए, क्योंकि उसके सामने सम्भव है कि लोग अपने सही विचार प्रकट न करें। मिस्टर ह्यूम को लार्ड डफरिन की यह दलील जंची और जब उन्होंने कलकत्ता, बम्बई, मद्रास और दूसरी जगहों के राजनीतिज्ञों के सामने रखा, तो उन्होंने भी लार्ड डफरिन की सलाह को एक स्वर से पसंद कर लिया। उसके अनुसार कार्यवाही शुरु कर दी गयी। लार्ड डफरिन ने मिस्टर ह्यूम से यह शर्त करा ली थी कि जब तक मैं इस देश में हूँ, तब तक इस सलाह के बारे में मेरा नाम कहीं न लिया जाए, और मिस्टर ह्यूम ने इसका पूरी तरह पालन किया।[5]

इस तरह स्पष्ट होता है कि कांग्रेस, जो कि राष्ट्रीय आन्दोलन की मुख्य वाहक संस्था रही है, के जन्म से पहले से ही उन लोगों का सलाह–मशविरा महत्व के साथ स्वीकार करने का मन ब्रिटिश शासकों के द्वारा बना लिया गया था, जो एक प्रकार से अपने अधिकारों के प्रति सचेत हो गये थे और इन अधिकारों के प्रति उन्हें जो चेतना प्राप्त हुई थी, वह नवजागरण का ही परिणाम थी।

नवजागरण के पुरोधाओं ने अपने विचारों में राष्ट्रीयता का सूत्रपात कर दिया था। राजा राममोहन राय ने जहां सामाजिक कुरीतियों से लड़ाई लड़ी, वहीं अंग्रेजी शिक्षा का प्रसार स्त्रियों की दशा में सुधार, और इसी के साथ भारतीयों के राजनीतिक अधिकारों को लेकर भारतीयों में नयी चेतना पैदा कर रहा था। उनके बाद स्वामी दयानन्द सरस्वती ने स्वदेशी और स्वराज्य का ऐसा अलख जगाया कि उनके अनुयायी राष्ट्रीय आन्दोलन के महत्वपूर्ण वाहक बन गये। स्वामी दयानन्द ने जब घोषित किया कि ''विदेशी राज्य चाहे कितना भी अच्छा क्यों न हो, स्वदेशी राज्य की तुलना में, चाहे वह कितना भी बुरा क्यों न हो, कभी अच्छा हो ही नहीं सकता।''[6] इस घोषणा ने स्वदेशी आन्दोलन के लिए भारतीयों में अद्‌भुत उर्जा का संचरण कर दिया। यही भाव स्वदेशी आन्दोलन की आत्मा बनकर तब तक आन्दोलन को गति देता रहा, जब तक कि भारत से विदेशी सत्ता की पराधीनता समाप्त नहीं हो गयी। श्रीमती एनी बेसेण्ट ने जब लिखा कि ''स्वामी दयानन्द पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने यह नारा लगाया था कि ''भारत भारतीयों के लिए है।''[7] तो इन भावनाओं और घोषणाओं से राष्ट्रीय आन्दोलन की भावना उदात्त वेग के साथ प्रवाहित हो उठी। इसी प्रकार स्वामी विवेकानन्द ने जब विश्व समुदाय के सम्मुख भारतीय संस्कृति की श्रेष्ठता को प्रमाणित कर दिया, तो उससे भारतीयों का सिर गर्व से ऊँचा हो उठा, और उनमें आत्मविश्वास, आत्मशक्ति और स्वाभिमान छलक उठा। नवजागरण से उत्पन्न इस उत्साह ने नवयुवकों को विदेशी साम्राज्यवाद के विरूद्ध नया साहस प्रदान किया और इस साहस से भरकर भारतीयों ने राजनीतिक स्वाधीनता का समर्थन किया।

यद्यपि कांग्रेस की स्थापना का उद्‌देश्य मिस्टर ह्यूम के लिए कुछ भी हो, किन्तु जब उन्होंने 1 मार्च 1883 को कलकत्ता विश्वविद्यालय के छात्रों को सम्बोधित करते हुए एक पत्र के माध्यम से पचास ऐसे नवयुवकों की मांग की, जो सच्चे, निस्वार्थी, आत्मसंयमी और नैतिक साहस से भरे होने के साथ–साथ अपनी मातृभूमि की सेवा के प्रति जागरूक भी हों, तो उन्हें वही लोग मिल पाए, जो नवजागरण से प्रभावित थे। और इन लोगों ने कांग्रेस के माध्यम से राष्ट्रवाद को सृजित करने, राष्ट्रीय आन्दोलन को संगठित करने तथा राजनीतिक चेतना उत्पन्न करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया, परन्तु प्रारम्भिक कांग्रेस कोई क्रान्तिकारी संगठन नहीं था। इसके नेता सरकार के प्रति कोई विद्रोह की भावना नहीं रखते थे। वे न केवल संवैधानिक उपायों में विश्वास करते थे, वरन् वे सरकार के प्रति

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 4, Issue 02, July 2021

पूर्णतया निष्ठावान भी थे। वे अंग्रेजी शासन, सभ्यता व संस्कृति के प्रशंसक थे। और राष्ट्रीय आन्दोलन में इस भावना ने ही उदारवादी विचारधारा को प्रश्रय दिया। आन्दोलन को दो दशकों तक उदारवाद ने गति प्रदान की। जैसा कि कहा गया है कि–

''1885 और 1905 के बीच का समय भारतीय राष्ट्रवादिता के बीजारोपण का समय था, और उस दौर के राष्ट्रवादियों ने उस बीज को अच्छी तरह और गहराई में बोया।.....परिणाम यह हुआ कि उन्होंने एक ऐसा समान राजनीतिक और आर्थिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया, जिसने भारत के विभिन्न वर्गों के लोगों को विभाजित करने की जगह एकबद्ध कर दिया। बाद में भारतीय जनता उस कार्यक्रम से सम्बद्ध हुई, और उसने एक सशक्त संघर्ष शुरु किया।''[8]

भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के प्रारम्भिक नेता ब्रिटेन से पूरी तरह प्रभावित रहे थे। वे लोग न केवल अंग्रेजी पढ़े–लिखे थे, बल्कि इंग्लैण्ड में रहकर शिक्षा ग्रहण किये हुए थे। इसलिए इन पर ब्रिटेन का प्रभाव गहराई तक था। ये ब्रिटेन की भारत का हितचिन्तक स्वीकारते थे। राष्ट्रीय आन्दोलन के उदारवादी नेता सुरेन्द्रनाथ बनर्जी के प्रस्तुत कथन से इस बात की पुष्टि हो जाती है–''इंग्लैण्ड हमारा राजनीतिक पथ–प्रदर्शक है। हम इंग्लैण्ड से सम्बन्ध विच्छेद करना नहीं, वरन् एकीकृत होना चाहते हैं, स्थाई रूप से उस महान साम्राज्य के अन्तरंग अंग बनना चाहते हैं, जिसने शेष विश्व को स्वतंत्र संस्थाओं के आदर्श रूप प्रदान किया हैं।''[9]

यही भाव नवजागरण के नेताओं का भी था। नवजागरण के अग्रदूत कहे जाने वाले राजा राममोहन राय ने भारतीयों में नवचेतना का संचरण तो किया, लेकिन उन्होंने ब्रिटिश साम्राज्यवाद का विरोध नहीं किया। इसी प्रकार की विचारधारा स्वामी विवेकानन्द की रही है, जिन्होंने पाश्चात्य संस्कृति का समर्थन किया था। यही प्रभाव उदारवादी नेताओं में दिखाई पड़ता है। कांग्रेस का प्रारम्भिक काल उदारवादी चिन्तन का युग है। इसका प्रारम्भ 1885 से शुरु होकर 1905 तक चलता है। जैसा कि कहा गया है कि ''भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन का प्रारम्भिक युग उदारवादी युग के नाम से जाना जाता है। इसका समय कांग्रेस की स्थापना के साथ से लेकर 1905 तक का रहा है। इस काल में राष्ट्रीय आन्दोलन का संचालन उन नेताओं के हाथों में रहा, जो अपने विचार तथा कार्यों में उदारवादी थे। उनके मन में और मस्तिष्क पर भी पश्चिम के उदार अंग्रेज विचारकों का विशेष प्रभाव था। वे अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली, न्यायिक व्यवस्था और राजनीतिक संस्थाओं में पूरी निष्ठा रखते थे। इसलिए वे भारतीय समाज को पश्चिमी समाज के ढ़ांचे पर गठित करना चाहते थे, और पश्चिम की संस्थाओं का अनुकरण करना चाहते थे।''[10]

जिस कालखण्ड में भारत में उदारवाद का प्रसार हुआ है, उस समय उदारवाद इंग्लैण्ड में सर्वाधिक प्रभावी और प्रिय विचारधारा थी। इस सिद्धान्त के चिन्तन का धरातल पश्चिम में प्रचलित व्यक्तिवादी धारणा द्वारा पोषित होता था। इस विचारधारा ने व्यक्ति मात्र की उपादेयता को अभिप्रेरित किया है। यूरोप में भी यह विचारधारा नवजागरण काल से मौजूद रही है। उदारवादी विचारधारा का विश्वास–बुद्धिवाद, वैचारिक स्वतंत्रता, सहिष्णुता, प्राकृतिक अधिकार, समानता तथा व्यक्ति की गरिमा पर सदैव टिका रहा है। यही विचारधारा भारतीय नवजागरण में भी कार्यरत थी। महर्षि दयानन्द के

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 4, Issue 02, July 2021

अतिरिक्त नवजागरण के प्रायः सभी नेता किसी न किसी रूप में ब्रिटेन की इस सर्वाधिक प्रिय विचारधारा से प्रभावित थे, और सभी ने इसके प्रभाव के वशीभूत ही भारत में ब्रिटिश शासन का खुलकर विरोध करने और स्वाधीनता प्राप्ति के स्थान पर अधिकाधिक सुविधाओं की बात कही है। राष्ट्रीय आन्दोलन के प्रारम्भिक दशकों में भी नवजागरण के इसी प्रभाव के वशीभूत उदारवादी विचारों को भारी प्रश्रय प्राप्त हुआ है–

''उन्नीसवीं शताब्दी की अन्तिम दशकों में भारत में राष्ट्रीयता के जन्म का काल कहा जा सकता है। इसी काल में कई राष्ट्रीय संगठनों का जन्म हुआ। उन सभी का उद्देश्य अपने–अपने क्षेत्र में भारतीय राजनीति को नयी दिशा देना था। यद्यपि इन संगठनों में से किसी को भी राजनीतिक स्वाधीनता की कोई संकल्पना नहीं थी, तथापि इन संगठनों ने देश के विभिन्न भागों में राजनीतिक चेतना को जगाने का बहुमूल्य काम किया।''[11] यह बहुमूल्य कार्य नवजागरण के रूप में सम्पन्न हुआ कांग्रेस के प्रारम्भिक काल में उन भारतीयों का वर्चस्व रहा है, जो नवजागरण से पूरी तरह प्रभावित थे। यही प्रभाव भारतीय राजनीतिकारों पर भी खूब गहरा रहा है। उदारवादी चिन्तन की गिरफ्त में रहने के पीछे भी कांग्रेस में यही प्रभाव कार्यरत था, क्योंकि–''अपने प्रारम्भिक वर्षों से कांग्रेस की प्रमुख मांगें यही थीं कि कुछ राजनीतिक सांविधानिक सुधार किये जाएं, कौंसिलों में प्रतिनिधिक तत्व को भी स्थान मिले और भारतीयों को सरकारी नौकरियों में अधिक अवसर दिये जाएं। इस प्रकार सब मिलाकर कांग्रेस प्रारम्भ में एक सुधारवादी संगठन ही था, कोई क्रान्तिकारी आन्दोलन नहीं। इस पर सुरेन्द्रनाथ बनर्जी, दादा भाई नौरोजी और गोपालकृष्ण गोखले सरीखे उदारवादी राष्ट्रवादियों का प्रभुत्व था और इन लोगों का ब्रिटिश सरकार की जन्मजात न्यायप्रियता तथा प्रजातांत्रिक भावनाओं में असीम विश्वास था, क्योंकि वे अंग्रेजी पढ़े और अंग्रेजी संस्कृति तथा आदर्शों में ढ़ले हुए देश के एक छोटे से विशिष्ट वर्ग का नेतृत्व करते थे। ये उदारवादी नेता भारतीयों को शासन में अधिक अधिकार दिए जाने के पक्षपाती थे, किन्तु उनका अंग्रेजों की सहृदयता में तथा ब्रिटिश संस्थाओं की श्रेष्ठता में अटूट विश्वास था। वे समझते थे कि भारत सांविधानिक उपायों द्वारा ही, ब्रिटिश सरकार के साथ सहयोग की नीति का पालन करते हुए, धीरे–धीरे ब्रिटिश शासन के अन्तर्गत स्वशासन के लक्ष्य की ओर बढ़ता चला जाएगा।''[12]

निष्कर्ष :

राष्ट्रीय आन्दोलन का अपने प्रारम्भिक काल एक प्रकार से निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन अपने प्रारम्भिक वर्षों में एक प्रकार से ब्रिटिश शासकों की दया पर आधारित था। इसका सीधा–सीधा दबाव शासकों पर नहीं था। आलोचकों ने उदारवादियों की इस प्रवृत्ति को भिक्षावृत्ति की संज्ञा दी थी। राष्ट्रीय आन्दोलन के इस काल में राजनीतिक स्वामीभक्ति का वर्चस्व था। अपनी आवश्यकताओं को भी ब्रिटिश शासकों से बड़ी दयनीयता के साथ मांगा जाता था। यह मांगना अधिकार के साथ कम, और याचना के साथ अधिक था। उदारवादी विचारधारा के सम्बन्ध में कहा जाता है कि उदारवाद और मितवाद हमारे संघ के उसूल या सिद्धान्त होते हैं। उदारवाद की भावना में जाति, धर्म औ मत–मतान्तरों से मुक्ति, मनुष्य और मनुष्य के बीच न्याय की कामना करने वाले सभी लोगों के प्रति श्रद्धा, शासकों के प्रति वैधानिक रूप में उचित स्वामीभक्ति, पर साथ ही

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 4, Issue 02, July 2021

कानूनी हक के रूप में लोगों के लिए समानता के अधिकार की मांग सन्निहित है। मितवाद में यह विचार सन्निहित है कि उन आदर्शों अथवा लक्ष्यों के लिए व्यर्थ में पागल न हुआ जाए, जिन्हें प्राप्त करना असम्भव है, अथवा जो पहुंच से बहुत दूर हैं, बल्कि प्रतिदिन उन आदर्शों और अधिकारों की प्राप्ति के लिए स्वाभाविक विकास के रूप में कदम उठाए जाते रहें, जो निकटवर्ती हों, और जिन्हें आपसी समझदारी तथा सद्भावना से प्राप्त किया जा सकता हो।

स्पष्ट है कि राष्ट्रीय आन्दोलन की उदारवादी विचारधारा में जातीय ऊँच–नीच तथा धार्मिक मत–मतांतरों से मुक्ति की बात कही गयी है। यह विचारधारा प्रमुख रूप से नवजागरण के प्रत्येक पुरोधा ने अपने कार्यक्रम में सम्मिलित की, तथा उस पर गहराई से कार्य भी किया गया। नवजागरण के अग्रदूत राजा राममोहन राय ने धर्म के मत–मतान्तर को दरकिनार करके सभी धर्मों में अद्वैतवादी सिद्धान्तों का दर्शन किया है। वस्तुतः राष्ट्रीय आन्दोलन के उदारवादी युग पर भारतीय नवजागरण का प्रभाव पूरी तरह से परिलक्षित होता है।

सन्दर्भ सूची

1. J.N. Farguhas : Modern Religious Movement in India, P. 148
2. K.P. Karunakaran : Religious and Political Awaking in India, 1965, P-189
3. Zakaria : Ranasant India, P-129
4. डॉ0 वी0 पट्टाभि सीरतारमैया : कांग्रेस का इतिहास, सत्साहित्य प्रकाशन, दिल्ली 1958, पृ0–10
5. उपर्युक्तानुसार
6. स्वामी दयानन्द सरस्वती : सत्यार्थ प्रकाश
7. डॉ0 वी0पी0 वर्मा : आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिन्तन, पृ0–70
8. विपिन चन्द्र/अमलेश त्रिपाठी/वरूण दे : स्वतंत्रता संग्राम, पृ0 77–78
9. Surendra Nath Benerjee : Quoted from A.R. Desai Social Background of Indian Nationalism, P-296-297
10. K.M. Munshi : Advant of Indipendence, P-18
11. A.R. Desai : Social Background of Indian Nationalism, 1982, P-328
12. डॉ0 वी0पी0 वर्मा : आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिन्तन, पृ0 86